पर्वतराज हिमालय की बर्फीली वादियां, अपने अंदर न जाने कितने रहस्यों को छुपाए हुए हैं। पहाड़ी गांवों की ठंडी रातों में, अलाव के इर्द-गिर्द बैठे गांव वाले जब भी इन रहस्यों का जिक्र करते हैं, तो सबसे पहले जिक्र आता है हिममानव यति का! और हर किस्से की शुरूआत एक ही वाक्य से होती है, " शक्तिशाली यति को देखने का सिर्फ एक ही नतीजा है; एक निश्चित मौत!! और मरने वाले को मिलती है--
बर्फ की चिता
कथा एवं चित्र
अनुपम सिन्हा
संपादक
मनीष चंद्र गुप्त

चिनार गुल बांध भारतीय इंजीनियरों की कुशलता का सबसे पक्का सबूत है। तेरह हजार फुट की ऊंचाई पर बना यह बांध लगभग पूरे उत्तरी क्षेत्र को बिजली सप्लाई करता है।
इसी कारण इस पर हर समय कड़ा पहरा रहता है –
क्योंकि, इसके नष्ट होने का मतलब है : पूरे क्षेत्र का –
कड़ड़ड़
कड़ड़ड़
...विनाश...
-और तबाही!

अचानक एक दिन बांध का पानी दीवारों के ऊपर से बहने लगा। आस-पास के नगरों में भयंकर बाढ़ आ गई -
सरकार तुरंत हरकत में आ गई -
बाढ़-पीड़ितों को सारी सुविधाएं पहुंचा दी गई हैं, सर!
पर ऐसा हुआ कैसे?
प्रधान मंत्री
तेरह हज़ार फुट की ऊंचाई पर बाढ़!!
सोचना भी मुश्किल है!
मैदानी इलाकों की हालत भी खराब है, सर! सभी नदियों में पानी खतरे के निशान को पार करने ही वाला है!
जाहिर है! पहाड़ी इलाकों का सारा पानी मैदानी इलाकों की तरफ तो बढ़ेगा ही!
तभी-
सर! मौसम विभाग की एक बहुत ही आश्चर्यजनक रिपोर्ट अभी-अभी आई है!
उनके अनुसार हिमालय की बर्फ का एक बड़ा भाग अचानक पिघल गया है!
...यह बांध की मात्रा में अचानक बढ़ोतरी
परंतु इतनी बर्फ अचानक पिघली कैसे?
इस बारे में उनको अब तक कुछ भी पता नहीं लग पाया है!
उसी वक्त - स्पेस कंट्रोल सेंटर में -
सर, इनसेट से भेजा गया यह चित्र है! इसमें यह चमक कैसी है?
आई गॉड!
यह तो किसी विस्फोट की चमक लगती है!!

और इस तरह रक्षा मंत्रालय भी इस मामले की चपेट में आ गया-
इसमें इतना परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं है! मेरे ख्याल से यह कोई बड़ी उल्का है, जो हिमालय पर आ गिरी है!
रक्षा मंत्रालय के शब्दकोष में ख्याल शब्द होता ही नहीं है!
और अगर ऐसा हुआ होता तो हमारे टेलीस्कोप उल्का को अवश्य देख लेते!
तो अब हम को क्या कदम उठाना चाहिए?
हमारा सबसे पहला काम उस स्थान पर जाकर छानबीन करना है जहां से बर्फ पिघली है; और दूसरा काम --
...कारण पता लगा कर इस विपत्ति को आगे बढ़ने से रोकना है!
इसके लिए तो हमको स्पेशल फोर्स वहां पर तुरंत भेजनी चाहिए ...
--जिनको बर्फीले इलाकों में युद्ध की स्पेशल ट्रेनिंग दी गई है! यही न?
हां! एकदम यही!
लेकिन हमारे ऐसे सभी जवान सियाचिन ग्लेशियर पर तैनात हैं! और खराब मौसम के कारण अगले दो दिनों तक वहां हेलीकॉप्टर नहीं जा सकता!
आई सी दैट! लेकिन इस वक्त --
इस वक्त हमको हेलीकॉप्टर से, वहां पर, एक ऐसे व्यक्ति को भेजना पड़ेगा जो शरीर का भी उतना ही शक्तिशाली हो, जितना दिमाग का तेज!
--यानि जो हमारे जवानों के वहां पहुंचने तक परिस्थितियों को काबू में रख सके?
ऐसा शख्स तो मेरी नजर में सिर्फ एक ही है!
सुपर कमांडो ध्रुव!
कमांडो फोर्स का कैप्टेन? इसके बारे में तो मैंने भी सुना है! लेकिन यह कभी किसी फौजी अभियान पर नहीं गया है...
..मुझे शक है कि यह उस लड़के के बूते की बात नहीं होगी!
उस लड़के की गारंटी मैं लेता हूं, सर!
मैं तुम्हारे फैसले की कद्र करता हूं, कमांडर! अगर तुम समझते हो कि ध्रुव इस काम के लिए सबसे उपयुक्त है...
--तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है!

और फिर - आई॰ जी॰ राजन के घर में -
...तुमको अपने साथ कुछ भी ले आने की आवश्यकता नहीं है, ध्रुव! हम तुमको इस स्थान के आस-पास कहीं उतारेंगे!
यहां से उत्तर-पूर्व दिशा में हमारी सेना का एक गुप्त आपातकालीन डिपो है! हम तुमको ट्रांसमीटर पर निर्देश देकर, वहां तक पहुंचा देंगे!
इस आपातकालीन डिपो में तुमको अपनी जरूरत की हर चीज मिल जाएगी! हथियार, गोलियां, दवाएं, डिब्बाबंद खाद्य सामग्री वगैरा! ये सब कुछ वहां पर होगा!
ठीक है, सर! तो मैं हिमालय की कड़कड़ाती ठंड का सामना करने के लिए कुछ गर्म कपड़े ले लूं! फिर मैं---
श्वेता! तू यहां क्या कर रही है?
तुम लोगों की बातें सुन रही थी!
गर्म कपड़े बीसवीं सदी की चीजें हैं, भइया! तुम इक्कीसवीं सदी के अत्याधुनिक साधनों से ठंड का सामना करो!
यह देखो, भइया! मेरा लेटेस्ट आविष्कार! इस यंत्र को तुम अपनी बेल्ट पर चिपका लेना! यह तुम्हारे बदन से लगी हवा की परत को, हमेशा बदन के तापमान पर रखेगा!...
...और तुमको हिमालय की बर्फ पर ऐसा लगेगा, मानो बगीचे में घास पर घूम रहे हो!
सर, इलेक्ट्रोनिक्स के मामले में मेरी बहन एकदम जीनियस है!
यह तो मैं खुद ही देख रहा हूं! नाऊ, आर यू रेडी?
एकदम, सर!
तो आओ! एक-एक सैकेंड कीमती है!

और सिर्फ पैंतालिस मिनट बाद –
कमांडर वर्मा ने तुम पर जितना भरोसा दिखाया है, उतना तो आज तक किसी फौजी पर भी नहीं दिखाया, ध्रुव!
ऐसा क्या जादू कर दिया तुमने उनपर?
कुछ खास नहीं! लगभग दो महीने पहल छः गुंडों के एक खतरना गैंग ने उनकी बेटी का अपहरण कर लिया था
तब मैंने उस को उन गुंडों के चंगुल से छुड़ाया था!
आज उन्होंने जिस भरोसे से मुझे इस अभियान पर भेजा है, मैं उस भरोसे को कभी ठेस नहीं लगने दूंगा!...
और न ही किसी भी ताकत को अपने देश का एक भी तिनक नष्ट करने दूंगा!
हमारे सेंसरों के मुताबिक विस्फोट वाला स्थान इसी दस कि॰ मी॰ के घेरे में कहीं मौजूद है!
मेरा ख्याल है कि तुमको मैं यहीं उतार दूं!
हमारी फौजें यहां पर दो दिनों के अंदर-अंदर पहुंच जाएंगी!
तब तक के लिए बेस्ट ऑफ लक, ध्रुव!
थैंक्यू, कैप्टेन!
और इस तरह शुरू हुआ ध्रुव की किस्मत का वह सफर, जिसकी आखिरी मंजिल थी– एक ठंडी मौत!
विस्फोट वाला स्थान ढूंढना ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए! अगर मैं इस पिघले पानी के साथ-साथ ऊपर की तरफ बढ़ूं–
तो जल्दी ही उस स्थान तक पहुंच जाऊंगा!
ध्रुव की तेजी से ऊपर की तरफ बढ़ती आकृति क्रमशः दूर होती गई –
और बर्फ से ढकी जमीन पर रह गए- सिर्फ एक जोड़ी पैरों के निशान!

फिर धीरे धीरे वे निशान भी मिटने लगे–
और बर्फ पर दो नए विशालकाय पैरों के निशान उभरने लगे–
उस बर्फीले वीराने में ध्रुव अब अकेला नहीं था–
यह रही वह जगह! पानी इस विशाल चट्टान के नीचे से आ रहा है। और इसके अंदर घुसने की कोई जगह नहीं है!...
–लेकिन एक बात तो साफ हुई! यह किसी उल्का के गिरने से नहीं हुआ है।
इस खोज की रिपोर्ट भेजनी बहुत जरूरी है।
ध्रुव ने एक शक्तिशाली ट्रांसमीटर बाहर निकाला।

हैलो! हैलो!! X70 NP हियर! आप मुझे सुन रहे हैं? ओवर!
यस! X70 NS हियर! हम सुन रहे हैं, ध्रुव! बोलो! ओवर!
सर, यह पानी एक विशाल चट्टान के नीचे से आ रहा— आऊ!! पानी बहुत गर्म है, सर!
गर्म है!
शायद यहां कोई सोया हुआ ज्वालामुखी है? जो अब फटने जा...
ध्रुव अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि—
कड़क
कड़ड...
पिटटट—टुईई...
यह तो— यह तो— यति लग रहा है। हिमालय की दंत-कथाओं का रहस्यमय हिम मानव!
और यही क्षण उसके लिए घातक सिद्ध हुआ—
ठाक
आह! यह मुझपर हमला क्यों कर रहा है?
शायद यह मुझे अपना दुश्मन समझ रहा है!...
पर, क्यों?
धाड़.

कहीं ऐसा तो नहीं कि यह ही किसी तरह से बर्फ को पिघला रहा है?
धा
ड
अगर ऐसा है तो मुझे इसको किसी तरह से रोकना पड़ेगा!
अगले ही पल ध्रुव तेजी से एक तरफ भागा।
और जब तक जमीन पर गिरा यति उठकर ध्रुव के पीछे भागता-
ध्रुव उसकी आंखों से ओझल हो चुका था।
लेकिन नर्म बर्फ से ढकी सतह पर भागते पैरों के निशान पहले की ही तरह मौजूद थे-
उसका पीछा करना ज्यादा कठिन नहीं था।
लेकिन ध्रुव को पकड़ पाना-
-बहुत मुश्किल काम था।
रस्सी खिंची - और यति एक बार फिर नीचे आ गिरा।

इस बार यति उठ नहीं पाया। रस्सी का दूसरा छोर लेकर ध्रुव बिजली की तेजी से लपका-
और यति मजबूत रस्सी के कुंडलों में कैद हो गया।
लेकिन - सिर्फ क्षण भर के लिए!
...ईयाााा
और इस बार होनी टल नहीं सकी-
यति के हाथ घूमे - और ध्रुव का शरीर हजारों फीट गहरी खाई में नीचे की ओर गिरने लगा-
लेकिन रस्सी का एक टुकड़ा अभी तक ध्रुव के हाथ में ही था-
यह उभरी हुई चट्टान! अब यही मेरी एकमात्र आशा है!

कोमल कदमों से ध्रुव इंच-इंच करके ऊपर चढ़ने लगा
पड़ा –
यह क्या है?
तैयार नहीं था
अचानक कहाँ से आ गए
भी कोई चीज तो इस धरती पर
भागने या बचने के रास्ते बंद हो चुके थे –
धाड़

इन दोनों प्राणियों के लिए यति एक शक्तिशाली पशु से ज्यादा कुछ नहीं था।
आ!!!
की एक लपट निकली।
अब यति बेबस था। दोनों प्राणी यति की तरफ बढ़े -
यही मौका है
और ध्रुव इन दोनों की तरफ
दोनों प्राणी ध्रुव की
फायदा उठाया
चीख सुनकर दूसरा प्राणी ध्रुव की तरफ पलटा -
उसका हथियार ध्रुव की ओर तना -
लेकिन ध्रुव ज्यादा तेज था -
ध्रुव ने उनको संभलने का मौका नहीं दिया -
तैयार नहीं थे।
ध्रुव उनके पीछे

तड़ाक
पता नहीं कितनी देर बाद जब ध्रुव की आंखें खुलीं —
?
तुम कौन हो, बेटे? और अब कैसी तबियत है तुम्हारी?
म...मैं बिल्कुल ठीक हूं! मेरा...मेरा नाम ध्रुव है। पर मैं हूं कहां पर?
तुम दोस्तों के बीच में हो, बेटे!
अपने दोस्त होने का पूरा सबूत दे दिया है।
पर आप लोग कौन हैं? और हमारी भाषा कैसे जानते हैं?
हिममानव यति!
संन्यासियों से सीखी है, जो तपस्या करने हिमालय पर आते हैं!
खबरदार लड़के! अगर तुम भारतवासी न होते तो अब तक मैं तुम्हारी जुबान के टुकड़े टुकड़े करके फेंक देता!
हम लोगों को सभ्यता की सीख तुम्हारे देश से ही मिली है।
सिगालू ने तुमको पीछे से ट्रांसमीटर पर बोलते सुना और जासूस समझ कर तुम पर हमला कर दिया। समझे?

तो फिर ऐसा क्यों हो रहा है? कौन कर रहा है ये सब?
कौन क्या कर रहा है? कुछ साफ साफ बोलो तो समझ में भी आए।
समस्या वाकई गंभीर है।
उनके, तेज गर्मी पैदा करने वाले हथियार इस बात का सबूत है कि उनके पास बर्फ को तेजी से पिघलाने की क्षमता है!
बर्फ, अभी भी तेजी से पिघल रही है?
रुको। मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

इस वक्त ध्रुव का अकेले जाना ही ठीक है। लेकिन अगर यह शाम तक वापस न आया, तो हम इसकी तलाश में अवश्य जाएंगे
हमारी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं ध्रुव
ऐसे ही ध्रुव बाहर निकला
आपने मुझे उसके साथ क्यों नहीं जाने दिया पिताजी ?
देखो, बेटे, हम यति अब तक सिर्फ इसीलिए जिंदा हैं, क्योंकि हम बाहरी दुनिया से छुप कर रहते आए हैं।
अगर अब इन पचड़ों में पड़े, तो दुनिया को हमारा पता लगते देर नहीं लगेगी।
और फिर हमारा क्या हाल होगा, यह सब तुम खुद ही समझ लो।
दूसरी तरफ – ध्रुव अपनी खोजबीन में व्यस्त था -
मुझे पूरा विश्वास है कि इस सारी समस्या की जड़ यही विशालकाय चट्टान है
हां। एक रास्ता है!!

और पांच मिनट बाद
अब मैं उनके ही हथियार से उनको मात दे दूंगा।
तीन!
हथियार का
बहती उबलती नदी का रास्ता
पानी वापस

अगर बात समझ में न आए तो चोंच बंद ही रखा करो। मेरा मतलब है कि अब बात हद से बढ़ गई है।
ध्रुव, बेखबर नीचे गिरे पत्थरों को ध्यान से देख रहा था
और मैं उस वक्त उस की कोई मदद नहीं कर रहा हूं? धिक्कार है मुझ पर।

इसके छुप छुपाकर जाने के अंदाज से साफ पता चल रहा है कि इसके इरादे नेक नहीं हैं।
उधर ध्रुव तीन प्राणियों के बीच में घिरा था और सबके हाथों में वही खतरनाक हथियार थे। ध्रुव ने पुरानी चाल एकबार फिर आजमानी चाही, लेकिन-
इस थकन से मेरी हत्या करने में भी नहीं हिचकेंगे। लेकिन -
ताड़
इसका पीछा करके देखना पड़ेगा कि यह आखिर जा कहाँ रहा है?
अपना काम कर लूंगा।
अब तो मुकाबला तीन से एक का था। और ध्रुव की नजर में यह मुकाबला बराबर का था-
अब मैं जो कुछ करूंगा उसके लिए मुझे किसी हथियार की जरूरत नहीं है।
और इस बीच में
ध्रुव का निशाना अचूक था। बाकी दोनों प्राणियों के हथियार भी गहरी खाई में जा गिरे।

ये तो गया। लेकिन इतनी देर में इसके दोनो साथी मेरे पास आ पहुँचे हैं।
अच्छा ही हुआ। वरना मुझे चलकर इनके पास जाना पड़ता।
आह
ये गया नम्बर दो!
गुस्से से भरे ध्रुव के हर वार में बुलडोज़र की सी ताकत भरी हुई थी।
पहले इनको अच्छी तरह से पीटकर अपना गुस्सा निकाल लूं
उसके बाद इनसे पूछताछ करूंगा।
खेल लगभग खत्म हो चुका था। ध्रुव लगभग जीत चुका था
कि तभी–उसके सिर पर पीछे से एक कायरतापूर्ण वार हुआ
और ध्रुव का मस्तिष्क दूसरी बार अंधेरे में डूबता चला गया

जिंगालू यह सब देख रहा था–
तो मेरा शक सही निकला। हमारे दल का कोई यति इन प्राणियों से मिला हुआ है
वरना यह कभी हो ही नहीं सकता था कि ये प्राणी हमारी नाक के नीचे रहें और हमको पता तक न चले।
लेकिन अब ये ध्रुव को कहाँ ले जा रहे हैं?
चट्टान का एक हिस्सा दरवाजे की तरह खुल रहा है।
यानि यह चट्टान ही इनके छुपने का गुप्त स्थान है। मैं अभी दल सब को
लेकिन तब तक
तुम तो हिंदुस्तानी बोल रहे हो। कौन हो तुम लोग?
तुम जैसे प्राणी तो मैंने पृथ्वी पर कभी नहीं देखे

हा हा हा। सुनो इसकी बात यह तो हम लोगों को अभी से दूसरी दुनिया में पहुंचा दे रहा है।
मेरे ख्याल से इसको असलियत बताने में कोई हर्ज नहीं है।
जरूर। लेकिन यह राज बताने से पहले इस खतरनाक लड़के को
पिंजरे में बंद कर दिया जाए
एक बटन दबा और ध्रुव के चारों तरफ रोशनी की छड़ें खड़ी हो गईं...
तो बच्चे मरने से पहले अपनी मौत को अच्छी तरह से देख लो।
समझ गया। लेकिन इस स्थान पर इतना बड़ा एटॉमिक स्टेशन बनाना तुम्हारे बूते की बात नहीं है!

यतिराज। तुम!
झटका लगा तो लेकिन हल्का सा। तुम्हारे मुंह से ट्रांसमीटर शब्द सुनकर ही मुझे कुछ शक हुआ था। यह शब्द अशिक्षित नहीं सीखते।
तुम जैसे गद्दारों के कारण ही हमारा देश सैकड़ों सालों तक गुलाम रहा।
तुमने अपने ही देश को बेच दिया।
लेकिन तुमने ऐसा क्यों किया
हां, बेटे। मैं। तुम्हें मुझको देखकर झटका तो जरूर लगा होगा, लेकिन मेरे सामने इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था।
पहली बात तो यह है, कि हम भारत की सीमा में रहते जरूर हैं लेकिन इस देश के नागरिक नहीं हैं, इसलिए मैं गद्दार नहीं हूं।
इधर कुछ सालों से हिमालय पर मनुष्यों का आवागमन इतना बढ़ गया है।
कि हम यतियों का छिपे रहना असम्भव हो गया। यह पक्का हो गया कि आने वाले सालों में कोई न कोई हमें अवश्य ढूंढ निकालेगा।
तब मैंने बेहतर यही समझा कि मैं खुद ही यतियों को लेकर किसी देश की शरण में चला जाऊं और इस क्षेत्र के देशों में जो मुझे ज्यादा ताकतवर लगा मैं उसी देश की शरण में चला गया।
अगर तुम भारत को अपना दोस्त समझते तो तुम्हारे एक एक यति की खातिर हमारे सौ सौ जवान हंसते हंसते कुर्बान हो जाते।
ताकतवर की शरण में जाने से ज्यादा अच्छा दयावान की शरण में जाना होता है यतिराज . .
लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है अब तुम किसी को यह नहीं बता पाओगे कि तुमने क्या देखा।
एक मिनट

अगर ये तुम्हारे दोस्त हैं यतिराज, तो इन्होंने तुम्हारे बेटे जिंगालू पर हमला क्यों किया।
हाहा। मैंने भी इनसे पहला सवाल यही किया था...
दरअसल मेरे सिवा और कोई यति, मेरे इन दोस्तों के बारे में नहीं जानता है। इनके बारे में मैं यतियों को सही वक्त आने पर ही बताऊंगा।
जिंगालू को दूर से आते देखकर इन लोगों ने समझा कि मैं इनसे मिलने आ रहा हूं पर पास आकर इनको अपनी भूल का एहसास हुआ। तब तक जिंगालू इन को देख चुका था।
अब इनके सामने सिर्फ यही रास्ता था कि मेरे आने तक जिंगालू को बंदी बनाकर रखें। ताकि मैं आकर उसको सारा माजरा समझा सकूं।
लेकिन जिंगालू सारा माजरा समझने के लिए खुद ही आ गया था—
मुसीबत में दोस्त ही काम आता है, अरिंगा। इस वक्त मैं तुम्हारे अलावा और किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकता!
फिक्र मत करो दोस्त! मैं सब कुछ समझ गया हूं। कोई गड़बड़ नहीं होगी।
अंदर
हल्ट सुक, देखो!
एक और यति।
यह तो जिंगालू है। लगता है इसको कुछ शक हो गया है।
इस बार इस को जाने देना खतरे से खाली नहीं है।
तुम जाकर चुपचाप इस का पीछा करो। देखो कि यह क्या चाहता है। जरूरत पड़ने पर अपनी पिस्तौल का प्रयोग करना।
पर मैं अकेला ही
अगर दो लोग साथ गए तो यतिराज को शक हो सकता है!
लेकिन बाहर जाने की क्या जरूरत है? वीडियो स्क्रीन पर सब कुछ दिख तो रहा है।
लेकिन बर्फ गिरनी शुरू हो गई है साथी।
जल्दी ही हमारे कैमरों के लेंस बर्फ से ढक जाएंगे। फिर हमें कुछ नहीं दिखाई पड़ेगा
तू जाता है डरपोक, या तुझे लात मार कर भेजूं?

हमारी चाल कामयाब रही भरिगा। चट्टान का दरवाज़ा खुल रहा है।
अब आगे सब तुम्हारे ऊपर है।
क-- कहां गया वह जिगालू का -- मेरा मतलब थंतिशत्र का बच्चा ?
वह रहा। लेकिन वह तो चट्टान से दूर जा रहा है।
इस चट्टान पर चढ़ कर देखूं तो दूर तक दिखाई पड़ेगा।
तब सुक ने एक पैर चट्टान पर रखा.
और तभी चट्टान खड़ी हो गई।
शाबाश भरिगा
लेकिन जिंगालू मेरा आकर तो देखो कि यह कौन है ?
अब मुझे सारा माजरा समझ में आ रहा है। तुम तुरंत जाकर साथियों को यहां बुलाकर लाओ।
तब तक मैं इन दुष्टों से निपटता हूं!

और चट्टान के अंदर
हमने तुमको अब तक सिर्फ इसीलिए जिंदा रखा है, ताकि तुम अपनी आंखों से अपने प्यारे देश की तबाही देख सको।
कल सुबह तक हमारी फौजें यहां पर पहुंच जाएंगी। और फिर तुम हम से दया की भीख मांगोगे।
कल सुबह! भारतीय फौजें यहां पर कल शाम से पहले नहीं पहुंच सकती हैं।
यानि इस महत्वपूर्ण युद्ध क्षेत्र पर इन दरिन्दों का अधिकार हो जाएगा!
तुमने हमारी योजना देखी यतिराज? अब तुमको हमारा दोस्त बनने का इनाम मिलेगा
हम तुमको एक दूसरी ही दुनिया में पहुंचा देंगे
मैं भी यही चाहता हूं कि सभी गद्दार दूसरी दुनिया में पहुंच जाएं
जिंगालू!
बेटे, तुम!
अब मैं तुम्हारा बेटा नहीं रहा यतिराज। अपने देश को बेचने वाला दलाल मेरा बाप कभी नहीं बन सकता।
तुमने यतियों से हर कदम पर झूठ बोला। तुमने कहा कि कुछ लोग यतियों पर जासूसी कर रहे हैं
इसी धोखे में मैंने भुम पर हमला किया
तुमने यतियों को झूठा डर दिखाकर, शाम के बाद निकलने को मना कर दिया।
ताकि तुम बेखटके अपने नए दोस्तों से मिलने जा सको।
मैंने जो कुछ भी किया वह सब यतियों की भलाई के लिए है!
और मुझे यह करने से रोकने वाला मौत के घाट उतार दिया जाएगा।
तो तुम भी अपनी मौत के लिए तैयार हो जाओ, यतिराज।
जिंगालू यतिराज की तरफ लपका-

और मानो दो पहाड़ आपस में टकराए -
धम्म्मम्मम्मम्म
गुस्से से पागल दोनों वाप बंदर, एक दूसरे पर ताबड़तोड़ वार कर रहे थे।
थिप्प आऊ
होय
ज्योतिराज का युद्ध का अनुभव त्रिगालू से कहीं ज्यादा था -
धाड़
लेकिन जवान त्रिगालू के शरीर में ताकत ज्योतिराज से अधिक थी -
धड़ड़ड़ड़ड़
कंट्रोल पैनल टूट गया
ये दोनों बंदर तो पूरा एटॉमिक स्टेशन तोड़कर हमारी सारी मेहनत को बर्फ में मिला देंगे!
तो सोच क्या रहे हो? भून डालो सालों को!

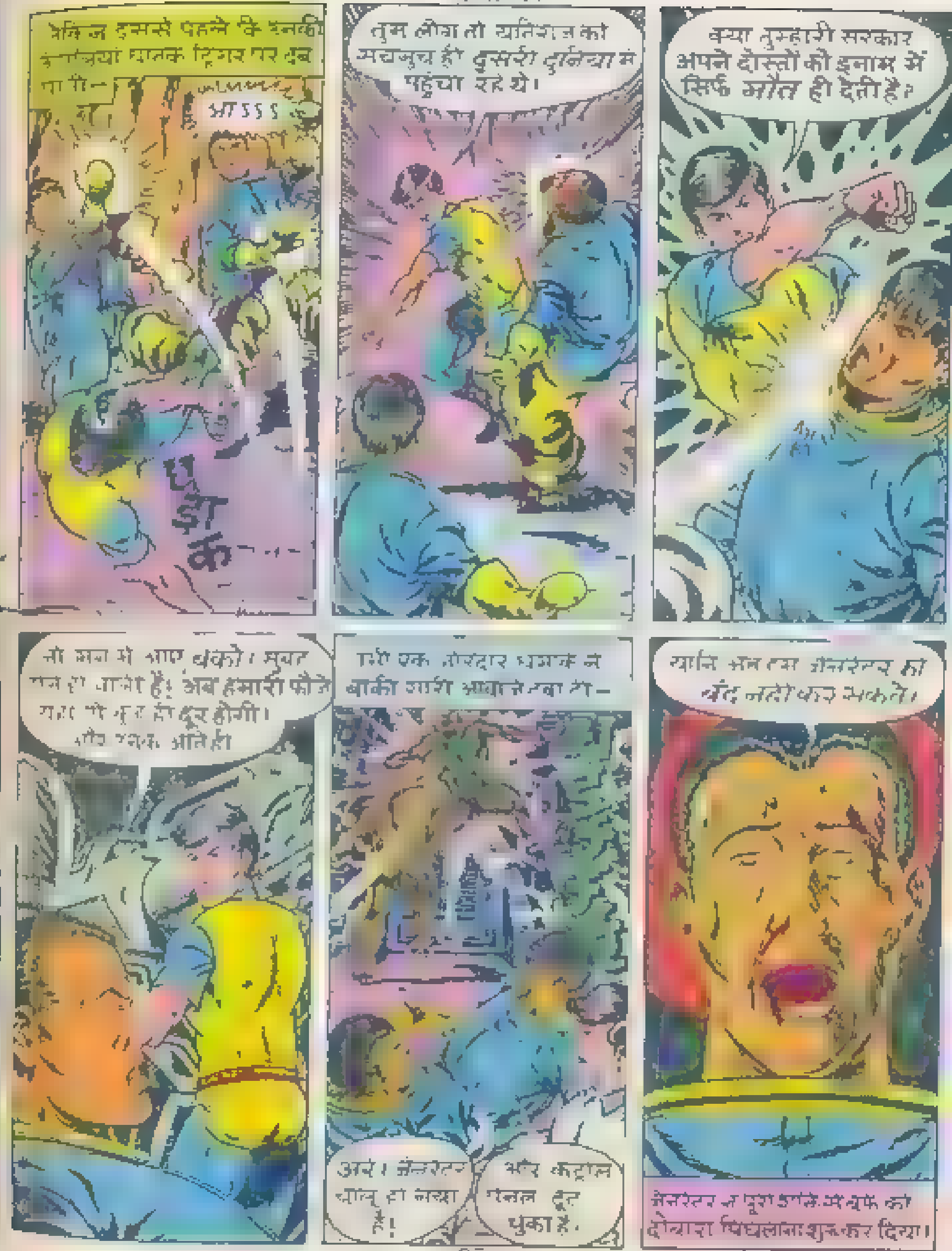
आऽऽऽ
धड़ाक
तुम लोग तो यतिराज को सचमुच ही दूसरी दुनिया में पहुंचा रहे थे।
क्या तुम्हारी सरकार अपने दोस्तों को इनाम में सिर्फ मौत ही देती है?
यानि अब हम जेनरेटर को बंद नहीं कर सकते।
अरे! जेनरेटर चालू हो गया है!
और कंट्रोल पैनल टूट चुका है।
दोबारा पिघलाना शुरू कर दिया।

उबलते पानी की प्रचंड धारा फिर से बह निकली -
पानी का रास्ता रोकने वाले भारी पत्थर भी धारा के सामने टिक नहीं सके -
जेनरेटर की गति, नियंत्रण से बाहर होने के कारण ज़ोर पकड़ रही थी। तेज गति के कारण स्पार्किंग शुरू हो गई थी -
भागो!
जेनरेटर फटने वाला है।
पलक झपकते सभी बाहर निकल आए
भागो, ध्रुव ? तुम रुक क्यों गए ?
भागकर कहाँ जाएंगे?
इस एटॉमिक स्टेशन के धमाके से कई किलोमीटर का इलाका तबाह हो जाएगा।
हम कुछ मिनटों में इतनी दूर नहीं भाग सकते।
अब तो मरना है ही।
लेकिन- मरने से पहले मैं तुमसे तुम से माफी मांगना चाहता हूं, ध्रुव।
मैं तुम्हारा और तुम्हारे देश का दुश्मन बन गया था। लेकिन अगर तुमने अपनी जान की बाज़ी न लगाई होती तो हम दोनों अब इस धरती पर न होते।
तुमने मेरी आँखें खोल दी, बेटे

कोई बुजुर्ग मुझसे माफी मांगे! यह मेरे लिए शर्म की बात है! पर अगर मेरे ऐसा करने से आपको शांति मिलेगी, तो मैं फिर से आपको अपना दोस्त कहता हूं!
धन्यवाद बेटे! अब मुझे मौत का कोई डर नहीं है!
मौत से तो मैं भी कभी नहीं डरा!
पर इस धमाके से जो बर्फ पिघलेगी, वह पानी पूरे उत्तरी क्षेत्र में विनाश की लहर...
अचानक - ध्रुव की आंखें तेज गति से बहते पानी को देखकर चमक उठीं -
जिंगारू! जल्दी बताओ! तुम इतने तेज बहते पानी में तैर सकते हो?
मेरे पिता ने अपनी भूल मान ली है। इस वक्त अगर तुम कहो तो मैं इस नदी का रुख भी मोड़ सकता हूं!
इसकी जरूरत नहीं है!
वक्त बहुत कम है! यतिराज, आप मेरा एक हाथ पकड़िए, और जिंगारू, तुम मेरा दूसरा हाथ पकड़ो!
हम दो मिनट में चार किलोमीटर की दूरी तय करेंगे!
तीन आकृतियां तेजी से बहते पानी की तरफ गिरीं।

और फिर पलक झपकते ही तीनों नजरों से गुम हो गए –
दूसरी तरफ – दुश्मन देश की सेना अपने मुकाम पर पहुंच चुकी थी –
कामरेड, ये दोनों हमारी तरफ भागते क्यों आ रहे हैं?
और ये चिल्ला क्या रहे हैं?
भागो! जेनरेटर फटने वाला है! भागो!
इन शब्दों ने दुश्मन सेना पर जादू का सा असर किया। भयभीत सैनिकों के कदम भागने के लिए उठे –
भागो
भा गो

लेकिन पाप का घड़ा फूट चुका था। पलभर में हिमालय की छाती पर लाशें ही लाशें बिछ गईं –
बुराई का अंत सिर्फ विनाश ही है!
अगर मैं बुराई का साथ देना जारी रखता, तो मेरा भी यही हाल होना था!
जानते हो, ध्रुव? पहले हमलोग बहुत खुश थे!
लेकिन जब से हम मानवों की संगत में आए हैं, तबसे हम पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है! दिन का चैन और रातों की नींद हराम हो गई है!
लेकिन अब तो हम दुनिया के सामने आ गए हैं! अब न जाने हमारा क्या होने वाला है?

मुद्रक : गोयल आफसैट वर्क्स, दिल्ली